इकाई 5 : पर्यावरण एवं प्रकृति

पाठ 5.1 : ग्राम्य जीवन

पाठ 5.2 : मेघालय का एक गाँव : मायलिनोंग

पाठ 5.3 : बूढ़ी पृथ्वी का दुख

इकाई 5 पर्यावरण एवं प्रकृति

पेड़ों, नदियों, हवाओं, बादलों एवं पहाड़ों का मानव से सहज रिश्ता है और यह रिश्ता कायम रखना मानव के अस्तित्व के लिए आवश्यक है, परंतु विकास की दौड़ में हम इतने आत्मकेंद्रित हो गए हैं कि अपनी जरूरत की सारी चीज़ों को सहेज लेने की चाह में पर्यावरण के प्रति पूरी तरह लापरवाह होते जा रहे हैं। आधुनिक समाज का प्रकृति से जुड़ाव कम होता जा रहा है और जिन समाजों में यह अभी भी बरकरार है, जैसे वन–प्रांतर में निवासरत आदिवासी समुदाय, वहाँ भी आधुनिक बनाने या बनने की अंधी दौड़ में प्रकृति से दुराव अवश्यंभावी है। सभ्यता, समाज और प्रकृति का रिश्ता परस्पर विरोधाभासी बनता दिखाई देता है। प्रकृति, समृद्ध समाज और विकास जैसी अवधारणाओं पर प्रश्न उठाने और नए सिरे से सोचने की जरुरत है। इस इकाई में संकलित रचनाएँ आपको पर्यावरण एवं प्रकृति के अवलोकन का अवसर देती हैं साथ ही संस्कृति व परिवेश के विविध आयामों पर गर्व करने की प्रेरणा देती है एवं उनके प्रति संवेदनशीलता का अहसास कराती हैं। इतना ही नहीं अपनी आने वाली पीढ़ियों को हम विरासत में क्या देना चाहते हैं, इसके प्रति एक बार पुनः सोचने के लिए प्रेरित करती है।

डॉ. मुकुटधर पांडेय ने **ग्राम्य जीवन** कविता में गाँव के नैसर्गिक सौंदर्य का मनोहारी चित्रण किया है। इसमें बताया गया है कि सभी तरह की समृद्धियों से पूर्ण होते हुए भी ग्रामवासी सहज जीवन जीते हैं, उनकी इस सहजता को उनकी अज्ञानता और भोलापन समझने की भूल करना उचित नहीं है।

मेघालय का एक गाँव : मायलिनोंग एक रोचक यात्रा वृत्तांत है। चित्रात्मक शैली में लिखा गया यह यात्रावृत्त हमें अनेक छोटे–छोटे अनुभवों के जरिये एक ऐसे गांव का साक्षात्कार कराता है जिसे कि भारतवर्ष का सबसे स्वच्छ गांव घोषित किया गया है। अपने प्राकृतिक परिवेश से परिचित कराने के साथ यहां के निवासियों की साफ–सुथरी जीवन शैली से पाठकों को आकर्षित करना है।

बूढ़ी पृथ्वी का दुख कविता में निर्मला पुतुल ने आधुनिक सभ्यता एवं विकासशीलता के दौर में धरती के बदलते स्वरूप एवं लगातार हो रहे प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की समस्या को प्रभावी ढंग से चित्रित किया गया है। प्रकृति के दर्द को रेखांकित करती इस कविता में मानव के संवेदनहीन होने पर कटाक्ष किया गया है।

पाठ 5.1 : ग्राम्य जीवन

डॉ. मुकुटधर पांडेय

C97IMB

मुकुटधर पांडेय *का जन्म 30 नवम्बर सन् 1885 ई. को छत्तीसगढ़ के जांजगीर–चाँपा जिले के बालपुर नामक गाँव में हुआ था। छायावाद का आरंभ इनकी रचनाओं से माना जाता है। उनकी रचना* ***कुररी के प्रति*** *प्रथम छायावादी रचना है। मानद डी. लिट् की उपाधि प्राप्त श्री पांडेय को भारत सरकार द्वारा 'पद्म श्री' से सम्मानित किया गया था। उनकी प्रमुख रचनाएँ* ***पूजा के फूल, शैलबाला, लच्छमा (अनूदित उपन्यास), परिश्रम (निबंध), मेघदूत (छतीसगढ़ी अनुवाद)*** *हैं।* ***ग्राम्य जीवन*** *कविता में कवि ने गाँव के प्राकृतिक सौंदर्य एवं ग्रामवासियों की सहज जीवनशैली का जीवंत चित्रण किया है।*

छोटे–छोटे भवन स्वच्छ अति दृष्टि मनोहर आते हैं,
रत्न–जड़ित प्रासादों से भी बढ़कर शोभा पाते हैं।
बट–पीपल की शीतल छाया फैली कैसी है चहुँ ओर,
द्विजगण सुन्दर गान सुनाते, नृत्य कहीं दिखलाते मोर।

शांति पूर्ण लघु ग्राम बड़ा ही सुखमय होता है भाई,
देखो नगरों से भी बढ़कर इनकी शोभा अधिकाई।
कपट, द्वेष, छलहीन यहाँ के रहने वाले चतुर किसान,
दिवस बिताते हैं प्रफुल्लित चित, करते हैं अतिथि का मान।

आस–पास में है फुलवारी, कहीं–कहीं पर बाग अनूप,
केले, नारंगी के तरुगण दिखलाते हैं सुन्दर रूप।
नूतन मीठे फल बागों से नित खाने को मिलते हैं,
देने को फुलेल–सा सौरभ पुष्प यहाँ नित खिलते हैं।

पास जलाशय के खेतों में ईख खड़ी लहराती है,
हरी–भरी यह फसल धान की कृषकों के मन भाती है।
खेतों में आते हैं ये हिरणों के बच्चे चुप–चाप,
यहाँ नहीं है छली शिकारी जो धरते सुख से पदचाप।
कभी–कभी कृषकों के बालक उन्हें पकड़ने जाते हैं,
दौड़–दौड़ के थक जाते वे कहाँ पकड़ में आते हैं।
बहता एक सुनिर्मल झरना कल–कल शब्द सुनाता है,
मानो कृषकों को उन्नति के लिए मार्ग बतलाता है।

गोधन चरते कैसे सुन्दर गलघंटी बजती सुख मूल,
चरवाहे फिरते हैं सुख से देखो ये तटनी के कूल।
ग्राम्य जनों को लभ्य सदा, सब प्रकार सुख शांति अपार,
झंझट हीन बिताते जीवन, करते दान धर्म सुखसार।

शब्दार्थ

प्रासाद – महल; **द्विजगण** – पक्षीगण; **फुलेल–सा** – इत्र के समान; **लभ्य** – प्राप्त, सुलभ; **तटनी** – नदी।

अभ्यास

पाठ से

1. कवि ने किसानों को छल–कपट और द्वेषहीन के साथ चतुर भी क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।
2. गाँव के लोग किस प्रकार से झंझटहीन जीवन बिताते हैं?
3. कविता में गाँव के बाग–बगीचों की सुन्दरता का चित्रण किन पंक्तियों में किया गया है?
4. बहता हुआ झरना हमें किस प्रकार से जीवन जीने का संदेश देता है?

पाठ से आगे

CKBH28

1. आपके गाँव/शहर की ऐसी कौन–कौन–सी खास बातें हैं, जिसे आप सभी को बताना पसंद करेंगे? लिखिए।
2. आपने या आपके मित्र ने ऐसे किसी गाँव का भ्रमण किया हो, जहाँ के प्राकृतिक परिवेश/सुंदरता ने आपको प्रभावित किया हो, तो उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
3. कविता में गाँव में पाए जाने वाले पेड़–पौधों, फलों एवं फसल की बात की गई है। आपके आसपास के क्षेत्रों में कौन–कौन से पेड़–पौधों, फलों व फसल की पैदावार होती है? वर्णन कीजिए।
4. आजकल जंगली जीव–जंतु शहरों व गाँवों में क्यों घुस आते हैं? विचार कर लिखिए।

भाषा के बारे में

CKKS3V

1. कविता में आए निम्नांकित शब्दों के क्या अर्थ हैं? कविता को ध्यानपूर्वक पढ़कर इन शब्दों के अर्थ पता करके लिखिए। आप इसमें शब्दकोश की मदद भी ले सकते हैं।

   - प्रफुल्लित
   - अनूप
   - तरुगण
   - जलाशय
   - छली
   - सुनिर्मल
   - गोधन

2. हिन्दी भाषा की विशेषता है कि इसमें शब्दों की पुनरुक्ति की जा सकती है।

   (क) 'कल–कल', 'छोटे–छोटे' जैसे कई शब्दों का कविता में प्रयोग हुआ है। यहाँ एक ही तरह के शब्दों का पूर्ण रूप से दुहराव हुआ है। पाठ में आए ऐसे अन्य शब्द छाँटकर लिखिए।

   (ख) शब्दों की पुनरुक्ति को कुछ उदाहरणों द्वारा और समझने का प्रयास करते हैं–

   - 'घर–घर' शब्द का अर्थ हैं– हर घर। इसमें संज्ञा की पुनरुक्ति हुई है।
   - 'जल्दी–जल्दी' शब्द में कोई क्रिया कैसे हो रही है, इसका पता चलता है। इसमें क्रियाविशेषण की पुनरुक्ति हुई है।
   - 'काला–काला' शब्द में काले रंग की और अधिकता का आभास होता है। यहाँ विशेषण शब्द की पुनरुक्ति हुई है।

   उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर दी गई तालिका में ऐसे अन्य शब्दों को सोचकर लिखिए (तालिका में एक उदाहरण दिया गया है।)

संज्ञा	क्रियाविशेषण	विशेषण
घर–घर	जल्दी–जल्दी	काला–काला

योग्यता विस्तार

1. समूह गतिविधि :–

   मनोहर, पीपल, शीतल, छाया, शोभा, मोटर, झरना, सुंदर, पुष्प, फसल।

   उपर्युक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए साथियों के समूह में मिलकर एक नई कविता बनाइए। आप इस कार्य में अपने शिक्षक की सहायता ले सकते हैं।

   इन कविताओं को कक्षा/प्रार्थना सभा में प्रस्तुत करें और कक्षा में चार्ट पेपर पर प्रदर्शित कीजिए।

2. सुमित्रानंदन पंत की कविता **'ग्राम श्री'** की कुछ पंक्तियाँ यहाँ दी जा रही हैं। यदि संभव हो तो पुस्तकालय से खोजकर पूरी कविता पढ़िए।

फैली खेतों में दूर तलक
मखमल सी कोमल हरियाली,
लिपटीं जिससे रवि की किरणें
चाँदी की–सी उजली जाली।
तिनकों के हरे–हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक,
श्यामल भू–तल पर झुका हुआ
नभ का चिर–निर्मल नील फलक।

रोमांचित सी लगती वसुधा
आई जौ, गेहूँ में बाली,
अरहर, सनई की सोने की
किंकिणियाँ हैं शोभाशाली।
उड़ती भीनी तैलाक्त गंध
फूली सरसों पीली–पीली,
लो, हरित–धरा से झाँक रही
नीलम की कलि, तीसी नीली।

पाठ 5.2 : मेघालय का एक गाँव : मायलिनोंग

अनीता सक्सेना

CL4J76

अनीता सक्सेना *का जन्म 7 नवम्बर सन् 1956 ई. को ग्वालियर, मध्य प्रदेश में हुआ। वे कला व साहित्य के क्षेत्र से जुड़ी हुई हैं। वर्तमान में भोपाल में रहती हैं। उन्हें राज्यपाल द्वारा मध्य प्रदेश की स्टार यूनिसेफ वॉलंटियर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने देश–विदेश में कई जगहों की यात्राएँ की हैं। उनके यात्रावृत्त विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। टेलीविजन और आकाशवाणी के कार्यक्रमों में कहानी, कविता, पठन के माध्यम से सक्रिय हैं।*

हाल ही में मुझे मेघालय जाने का मौका मिला। मेघालय (यानी बादलों का घर) की राजधानी शिलांग है। वहाँ पहुँचकर मुझे पता चला कि शिलांग से 75 किलोमीटर दूर घने जंगलों के बीच बसा है, एशिया का सबसे साफ–सुथरा गाँव कहा जानेवाला मायलिनोंग। और मैंने वहाँ जाने का मन बना लिया।

हमारी यात्रा शुरू हुई। जल्द ही हम पहाड़ों के ऊपर थे। कहीं पहाड़ी झरने गिर रहे थे तो कहीं घने जंगल थे। मैंने देखा कि लोगों ने बाँस को आधा काटकर उसकी नाली बना दी थी, इससे पहाड़ से तेज धार में गिरनेवाले पानी को उसका सहारा मिल गया था।

आसमान में रुई के फाहों जैसे बादल उड़ रहे थे। पहाड़ पर चढ़ते वक्त हमारी कार के काँच पर नन्हीं–नन्हीं बूँदें दिखने लगीं। मैंने कहा, ''अरे, बारिश आ गई!'' गोबिन कार रोककर बोला, ''नहीं मैडम जी, यह बारिश नहीं, बादल है। आप बाहर निकल कर देखिए जरा।'' और सच में बाहर बिलकुल बारिश न थी। कार के ऊपर से बूँद–बूँद मिलकर पानी की धारा बहने लगी थी लेकिन ऐसे बाहर हाथ फैलाओ तो कुछ हाथ नहीं आता था। अद्‌भुत नजारा था! चारों तरफ सफेद बादलों का समंदर लहरा रहा था। जहाँ हम खड़े थे वहाँ से दस मीटर की दूरी पर कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। सड़क से गुजरती सारी गाड़ियों ने अपनी इमरजेंसी लाइट जलाई हुई थीं। सामने से भी गाड़ियाँ आ रही थीं। सभी बहुत ही धीमे और एक के पीछे एक चल रही थीं ताकि कोई दुर्घटना न घट जाए। पहाड़ी रास्ता था। एक तरफ हजारों मीटर गहरी खाई थी, दूसरी तरफ पहाड़।

धुंध में रास्ता कुछ समझ नहीं आ रहा था। एक छोटी–सी जगह पर गोबिन ने गाड़ी रोककर एक टैक्सीवाले से द्वाकी का रास्ता पूछा। द्वाकी मुख्य सड़क पर बसा एक छोटा सा शहर है। टैक्सीवाला बोला, ''मैं वहीं जा रहा हूँ। मेरे पीछे–पीछे चले आओ।'' सारी बातचीत गोबिन के माध्यम से असमी में ही हो रही थी। हिंदी यहाँ कम ही बोलते हैं। धुंध में हम उसके पीछे–पीछे चल दिए।

आगे जाकर पोनटोंग नाम की एक जगह आई जहाँ से एक रास्ता द्वाकी जा रहा था और दूसरा मायलिनोंग । वहाँ उस सूमो के ड्राइवर ने गाड़ी रोकी और काँच खोलकर इशारा किया कि इस तरफ चले जाइए और हमारी गाड़ी वहाँ से अठारह किमी दूर मायलिनोंग की तरफ बढ़ चली।

ट्रेवल मैगज़ीन "डिस्कवर इंडिया" द्वारा 2003 में मायलिनोंग को 'एशियाज क्लीनेस्ट विलेज' की उपाधि दी गई। इसके बाद 2005 में इसे भारत का सबसे साफ गाँव घोषित किया गया। यहाँ कचरा डालने के लिए जगह–जगह बाँस की टोकरियाँ लगाई गई हैं। इनमें इकट्ठे हुए कचरे से फिर खाद बनाई जाती है। आम जनता के लिए सड़क किनारे बने साफ़–सुथरे शौचालय हैं।

मायलिनोंग में हमारा गाइड हेनरी बना। हेनरी यहाँ घूमने आए लोगों को गाँव दिखाने और उनके रहने–खाने की व्यवस्था का काम करता है। वह अंग्रेजी और खासी दो भाषाएँ जानता है।

हेनरी सबसे पहले हमें ट्री हाउस और बाँस के कॉटेज दिखाने ले गया। वे बेहद खूबसूरत थे, उन्हें हेनरी के पिता ने बनाया था। ट्री हाउस बनाने के लिए सड़क के दोनों ओर के बड़े–बड़े पेड़ों को बाँस से जोड़ा गया था, उसके ऊपर मचान जैसा एक घर बना था। नीचे बाँसों की सीढ़ी से एक घुमावदार रास्ता बना था। सारा काम बाँस का ही था। यहाँ तक कि बाँधने के लिए भी बाँस की ही पतली छालें इस्तेमाल की गई थीं। मैं ट्री हाउस में एकदम ऊपर तक चढ़ गई। ट्री हाउस की छत से दूर तक एक समन्दर दिखा। यह बांग्लादेश में आई बाढ़ का पानी है। बांग्लादेश यहाँ से सिर्फ तीन किलोमीटर दूर है। लोग पैदल ही वहाँ आना–जाना कर सकते हैं।

लाइव रूट ब्रिज

हम लोग लाइव रूट ब्रिज के रास्ते की ओर चल दिए। गाँव के अन्दर से ही नीचे जंगल की तरफ उतरना था। शुरू में तो कोई दिक्कत नहीं हुई पर जब खड़ी चट्टानों से उतरना पड़ा तो फिसलने की चिन्ता हुई। मुझे यह ख्याल बार–बार सताने लगा कि चढ़ते समय क्या हाल होगा। खैर, हम धीरे–धीरे नीचे उतरते गए। कहीं–कहीं पर पक्की सीढ़ियाँ भी बनी थीं। चारों तरफ घना जंगल था। हमारे सिवा वहाँ और कोई नहीं दिख रहा था। शायद कम ही लोग आते होंगे यहाँ।

नदी के तेज बहाव की आवाज आ रही थी। जल्दी ही रूट ब्रिज हमें दिखाई दे गया। अद्‌भुत दृश्य था– नीचे तेज बहती वॉह थिलोंग नदी और उसके ऊपर लाइव रूट ब्रिज यानी रबर के पेड़ों की मोटी–मोटी जड़ों को जोड़–जोड़ कर बनाया गया पुल। ऐसी जड़ें जिन्हें कहीं से भी बाँधा नहीं गया था। जो स्वाभाविक रूप से

जुड़ी हुई थीं। पुल अच्छा–खासा चौड़ा था। उस पर बीच में मिट्टी बिछी हुई थी और गोल–गोल पत्थर रखे हुए थे।

हेनरी ने बताया कि यह पुल बहुत मज़बूत है। तीस लोग भी खड़े हो जाएँ तो इसका कुछ नहीं बिगड़ने वाला। हम लोग पुल पार कर उसके दूसरी तरफ पहुँचे। वहाँ दूसरे गाँव जाने के लिए पहाड़ काटकर सीढ़ियाँ बनाई गई थीं। हम लोगों ने चारों तरफ से पुल का मुआयना किया। हर तरफ से वह और ज्यादा सुंदर दिखता। यह कुदरत नहीं इंसान का करिश्मा था।

इस बीच हम हेनरी के पिता से मिले। मैंने उनको अभिवादन किया तो उनके चेहरे की झुर्रियों के बीच एक भोली–सी मुस्कान छा गई। उनकी उम्र करीब साठ–बासठ होगी। वे सिर्फ खासी भाषा जानते थे। हेनरी हमारा दुभाषिया बना।

मैंने पूछा, "आपका नाम क्या है?"

वे कुछ बोलते इससे पहले हेनरी बोल पड़ा– ''दिसम्बर।"

"हाँ, मैडम जी। इनका नाम दिसम्बर और मेरी माँ का नाम है फेस्टिवल। यहाँ ऐसे ही नाम रखे जाते हैं। आपको गाँव में वोडाफोन, आइडिया, एयरटेल जैसे नाम भी मिल जाएँगे। जो नाम सुने जाते हैं वही रख दिए जाते हैं। यहाँ महीनों के नाम पर, सप्ताह के दिनों के नाम पर भी लोगों के नाम हैं।"

दिसम्बर जी से मेरी बातचीत शुरू हुई। उन्होंने बताया कि उन्होंने अपने दादा से इस पुल के बारे में सुना था। खासी जनजाति के लोगों का मकसद, ऐसे पुल नोवेत गाँव से रिवाई गाँव को जोड़ना है।

पुल बनाने की इस परंपरा को एक विशेष जनजाति के लोगों ने पीढ़ी–दर–पीढ़ी जीवित रखा है। आज वे कहाँ पुल बना रहे होंगे कोई नहीं जानता। एक पुल बनाने में करीब सौ साल लग जाते हैं। लाइव रूट ब्रिज बनाने के लिए सबसे पहले रबर के पौधों को सोचे–समझे तरीके से लगाया जाता है। जब पौधे बड़े होने लगते हैं और उनकी हवाई जड़ें (सपोर्टिंग रूट्स) बाहर लटकने लगती हैं तब उनको बाँसों से चोटी की तरह गूँथते हुए चलते हैं। यह कोई एक दिन का काम नहीं होता, न ही एक महीने का, क्योंकि जीवित पेड़ों की जड़ें तब तक बढ़ नहीं जातीं तब तक उन्हें बाँधा नहीं जा सकता। रस्सी की तरह बढ़ती ये जड़ें चिपकती जाती हैं। एक–दूसरे से बँधती जाती हैं, धीरे–धीरे बाँसों की जगह बदलती जाती हैं। हमने जो पुल देखा वह करीब तीन सौ साल पुराना है।

मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा था। ''ऐसे पुल और कहाँ हैं?'' मैंने पूछा। उन्होंने बताया कि चेरापूँजी के पास डबल–डेकर पुल हैं, यानी एक पुल के ऊपर एक और पुल।

अचानक मुझे ट्री हाउस याद आया। मैंने उनसे इशारे में कहा कि आपने बहुत ही सुन्दर घर बनाया है तो वे मुस्कुरा उठे। ''कितने दिन लगे इसे बनाने में?'' मैंने पूछा।

हेनरी ने बताया, ''दो महीने।''

मैंने पूछा ''आपने ट्री–हाउस के सहारे के लिए जो बड़े–बड़े पेड़ों के तने लगाए हैं वे किस पेड़ के हैं?'' वे बोले ''कटहल के।''

दिसम्बर जी से बात करते–करते समय का पता ही नहीं चला। बाहर अँधेरा हो गया था और बारिश भी हो रही थी। वैसे भी यहाँ रात जल्दी हो जाती है। हेनरी ने जब कहा कि आप खाना खाकर सो जाइए तो हम फौरन मान गए। हम थक भी बहुत गए थे।

हेनरी की बहन सारा ने बहुत स्वादिष्ट दाल–चावल और परवल की सब्जी बनाई थी। उसे खाकर हम लोग गहरी नींद में सो गए।

सारी रात बारिश होती रही। सुबह उठे तो बिजली गायब थी। बाहर बादलों ने हमें चारों तरफ से घेरा हुआ था। अच्छा हुआ जो कल हम रूट ब्रिज देख आए थे। आज तो जाना संभव ही नहीं होता।

यहाँ चूँकि बारिश बहुत तेज होती है इसलिए हरियाली ज़्यादा और धूल कम है। यहाँ खासतौर पर सुपारी, काली मिर्च, तेज पत्ता, बाँस, फूल–झाड़ू, कटहल, लीची, अनन्नास, संतरा, केला आदि के पेड़ मिलते हैं। यहाँ मैंने पिचर प्लांट भी देखा। छोटे–छोटे कीड़े जब उसके पास पहुँचते हैं तो वह झट से ढक्कन बंद कर देता है। जब वे कीड़े मर जाते हैं तब उनको खा जाता है।

नीचे पहाड़ पर लकड़ी के बड़े–बड़े खम्बों के सहारे बनी कॉटेज में दो बड़े–बड़े कमरे, शौचालय और एक डायनिंग रूम था। सब कुछ बना था लकड़ी और बाँस का। बाँस की चटाइयों की दीवारें और छत सुपारी व झाड़ू के पत्तों से बनी है। छत इतनी मज़बूत और वाटर प्रूफ है कि लगातार होनेवाली बारिशों में भी एक भी बूँद पानी अन्दर नहीं टपकता।

घने जंगल और पहाड़ों के बीच बसा होने के कारण मायलिनोंग किसी भी कमी का एहसास नहीं कराता। यहाँ लोग पॉलिथीन का प्रयोग नहीं करते। हेनरी ने बताया कि मायलिनोंग में 94 परिवार बसे हुए हैं। यहाँ कुल 506 लोग रहते हैं। साक्षरता की दर यहाँ सौ प्रतिशत है। गाँव में दो स्कूल हैं– एक खासी और एक अंग्रेजी माध्यम का। सभी बच्चे पढ़ने जाते हैं। आठवीं के बाद पढ़ाई के लिए बच्चे शिलांग जाते हैं।

यहाँ के लोग खाना मिट्टी के चूल्हे पर बनाते हैं। चूँकि यहाँ बारिश ज्यादा होती है इसलिए चूल्हे के ऊपर बने एक झूले में लकड़ियाँ सुखाने के लिए रख दी जाती हैं, गर्म धुएँ से लकड़ियाँ सूख जाती हैं। इनका कपड़े सुखाने का तरीका भी निराला है, इन्होंने बाँस का एक बड़ा–सा पिंजरा बनाया हुआ है, जिसके नीचे कोयले के जलते हुए अंगार रख देते हैं और ऊपर कपड़े फैला दिए जाते हैं, हल्की गर्मी के ताप से कपड़े सूख जाते हैं।

मायलिनोंग में एक छोटी–सी दुकान है जो साबुन, मोमबत्ती, माचिस वगैरह छोटी–मोटी जरुरतों को पूरा करती है। मायलिनोंग से दो टैक्सियाँ हर रोज सुबह शिलांग जाती हैं और शाम को वापस आती हैं। यहाँ के लोग आटा, दाल, चावल, हरी सब्जियाँ तथा खाने–पीने का हर सामान शिलांग से ही लाते हैं। यहाँ सब्जी, अनाज कुछ भी पैदा नहीं होता। हाँ मछली, सुअर, मुर्गियाँ जरुर पाली जाती हैं। हेनरी ने बताया कि शिलांग से मायलिनोंग के बीच सड़क बने बारह साल हुए हैं। इसके पहले आना–जाना और मुश्किल था। गाँव के मुखिया को सभी हेडमैन कहते हैं, उन्होंने गाँव को साफ़–सुथरा रखने के लिए नियमों को जगह–जगह लगा रखा है। जिसका सभी गाँववाले पालन करते हैं।

रूट ब्रिज के रास्ते में मैंने बड़े बच्चों को एक रोचक खेल खेलते देखा। केले के एक तने को उन्होंने जमीन में गाड़ दिया था। दूर एक रेखा खिंची हुई थी जिसके पीछे खड़े होकर वे नुकीले तीर से उस तने को भेदने की कोशिश कर रहे थे। आसपास खड़े बच्चे निशाना लगने पर तालियाँ बजा रहे थे।

हम भी इस अनूठी जगह के लिए मन ही मन तालियाँ बजाते हुए आगे बढ़ गए.....

शब्दार्थ

मुआयना – निरीक्षण; **दुभाषिया** – दो भाषा–भाषी लोगों के बीच संवाद स्थापित करनेवाला; **मकसद** – उद्देश्य।

अभ्यास

पाठ से

1. मायलिनोंग गाँव में बने घरों व कॉटेज की क्या विशेषताएँ हैं?
2. पहाड़ पर चढ़ते हुए दृश्य को लेखिका ने अद्भुत क्यों कहा है?
3. गाँव के पुल का नाम ''लाइव रूट ब्रिज'' ही क्यों रखा गया होगा?
4. ''यह कोई एक दिन का काम नहीं होता, न ही एक महीने का।'' लाइव रूट ब्रिज के बारे में ऐसा क्यों कहा गया?
5. मायलिनोंग में किस प्रकार के पेड़–पौधे पाए जाते हैं? और स्थानीय लोग इनका किस–किस तरह से उपयोग करते हैं?
6. मायलिनोंग को एशिया और भारत का सबसे स्वच्छ गाँव घोषित किया गया। ऐसी कौन–कौन सी विशेष बातें हैं, जिनके कारण इसे यह सम्मान प्राप्त हुआ?

पाठ से आगे

1. मायलिनोंग में लोगों के नाम हमारे और आपके नामों से भिन्न रखे जाते हैं, जैसे– फेस्टिवल, वोडाफोन, एयरटेल, दिसम्बर आदि।

(क) कल्पना करके लिखिए कि मायलिनोंग के लोगों ने और कौन–कौन से नए नाम रखे होंगे?

(ख) सुखिया की काकी का नाम 'बुधवारी बाई' है क्योंकि वह बुधवार के दिन पैदा हुई थी। इसी प्रकार आपके आसपास भी ऐसे लोग होंगे जिनके नाम से कोई न कोई रोचक बात जुड़ी होगी । अपने साथियों व बड़ों से बातचीत करके ऐसे नामों व उसके बारे में पता कीजिए और लिखिए।

2. मायलिनोंग में कटहल के बड़े तनों पर ही ट्री हाउस बनाए जाते हैं तथा रबर के पेड़ों की जड़ों से ब्रिज तथा बाँस के पेड़ों से घर की नालियाँ, दीवारें आदि बनाई जाती हैं। यदि यही सब कुछ हमारे यहाँ बनाया जाए तो कौन–कौन से पेड़ों का उपयोग किया जाएगा और क्यों।

		पेड़	क्यों?
(क) ट्री हाउस	–	.....	.....
(ख) घर की दीवारें	–	.....	.....
(ग) घरों की छतें	–	.....	.....
(घ) यदि ब्रिज बनाना हो तो–		.....	.....

3 आपने किसी ऐसे प्राकृतिक स्थान का भ्रमण अपने परिवार या स्कूल के विद्यार्थियों के साथ किया होगा उसका वर्णन इस प्रकार कीजिए कि पढ़नेवाले उसे पढ़कर उस स्थान के बारे में अच्छे से समझ पाएँ।

4. लेखिका ने हेनरी के लिए एक शब्द का प्रयोग किया है 'दुभाषिया' अर्थात दो भाषा–भाषी लोगों के बीच संवाद स्थापित करनेवाला।

(क) आपके आस–पास लोग कौन–कौनसी भाषाएँ/बोलियाँ बोलते हैं? लिखिए।

(ख) यदि आपको कोई अन्य भाषा–भाषी व्यक्ति से बात करना हो और आप एक–दूसरे की भाषा नहीं जानते हों तब आप एक दूसरे से कैसे बात करेंगे?

भाषा के बारे में

1. 'जड़' के लिए पाठ में कई विशेषण शब्दों का प्रयोग किया गया है जैसे– मजबूत, मोटी–मोटी, हवाई आदि। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के लिए कौन–कौनसे विशेषण शब्द प्रयुक्त किए जा सकते हैं? सोचकर लिखिए।

   बादल –
   रास्ता –
   बारिश –
   पुल –
   साड़ी –
   पेड़ –
   नदी –

CLMBAG

2. पाठ में एक शब्द प्रयुक्त हुआ है– 'अद्‌भुत नज़ारा', इसमें से अद्‌भुत शब्द हिंदी का है और नज़ारा उर्दू का। हम बोल–चाल में इस तरह से भाषाओं का मिला–जुला प्रयोग करते हैं। आप इसी तरह के कुछ अन्य शब्द खोजकर लिखिए।

3. 'बाँस', व 'सड़क' दोनों संज्ञाएँ व्यंजनांत हैं। लेकिन 'बाँस' का बहुवचन 'बाँस' ही रहता है पर 'सड़क' का 'सड़कें' हो जाता है।

   जैसे– दस सड़कें, कई सड़कें

   दस बाँस, कई बाँस

   पाठ में अन्य संज्ञाएँ ढूँढ़िये और बहुवचन बनाने के नियमों पर चर्चा कीजिए।

योग्यता विस्तार

गतिविधि

1. इस यात्रा वृत्तांत की लेखिका को एक पत्र लिखिए, जिसमें आप निम्नांकित बिन्दुओं की मदद ले सकते हैं–

   - आपको उनका लेख कैसा लगा?
   - इस गाँव के बारे में आप और क्या–क्या जानना चाहते हैं?
   - अपनी किसी यात्रा से जुड़े अनुभव या घटना को भी साझा कर सकते हैं।

CLH7C4

2. चेरापूँजी के डबल–डेकर रूट ब्रिज की कल्पना करके चित्र बनाइए।

3. यदि आप अपने गाँव/शहर को सबसे स्वच्छ/सुन्दर बनाना चाहते हैं तो निम्नांकित स्तरों पर क्या–क्या कार्य करने की आवश्यकता है–

   - स्वयं के स्तर पर
   - प्रशासनिक स्तर पर
   - पंचायत स्तर पर।

4. एक समाचार पत्र में प्रकाशित इस खबर को ध्यानपूर्वक पढ़िए।

ये है एशिया का सबसे क्लीन गांव

503 लोगों की आबादी | **91** घर ही गांव में

2003 में इंडिया डिस्कवरी मैगजीन ने गांव को दी थी 'एशियाज क्लीनेस्ट विलेज' की उपाधि।

स्वच्छ भारत अभियान से जुड़कर भले ही देश बाद में सफाई का महत्व समझें, पर मेघालय के एक गांव के लोग पहले ही इसे समझ चुके हैं। ये गांव हैं माव्यनोंग। ये एशिया का सबसे साफ गांव है। गांव के हर घर में शौचालय हैं। चमचमाती सड़कों के अलावा और भी बहुत कुछ है यहां। साथ ही बच्चे से लेकर बड़े बुजुर्ग तक साफ-सफाई के प्रति गंभीर रहते हैं। 2007 में यहां के ग्रामीणों ने निर्मल भारत अभियान के तहत हर घर में शौचालय बनवा लिए थे।

इसी तरह आदर्श ग्रामपंचायत अथवा स्वच्छ ग्राम से संबंधित समाचारों को एकत्र करें?

पाठ 5.3 : बूढ़ी पृथ्वी का दुख

निर्मला पुतुल

CH63DR

निर्मला पुतुल *का जन्म 6 मार्च सन् 1972 ई. को झारखंड के दुमका जिले में एक संथाली परिवार में हुआ। वे संथाली भाषा की प्रसिद्ध कवयित्री हैं और सामाजिक कार्यकर्त्ता भी हैं। साथ ही विलुप्त होती आदिवासी सभ्यता एवं संस्कृति के संरक्षण व संवर्द्धन के लिए निरंतर प्रयासरत हैं, जो उनकी रचनाओं में परिलक्षित होता हैं। प्रस्तुत कविता आधुनिक सभ्यता के संदर्भ में होने वाले विकास एवं प्रगति पर कई प्रश्न उठाती है।*

क्या तुमने कभी सुनी है
सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से
पेड़ों की चीत्कार?

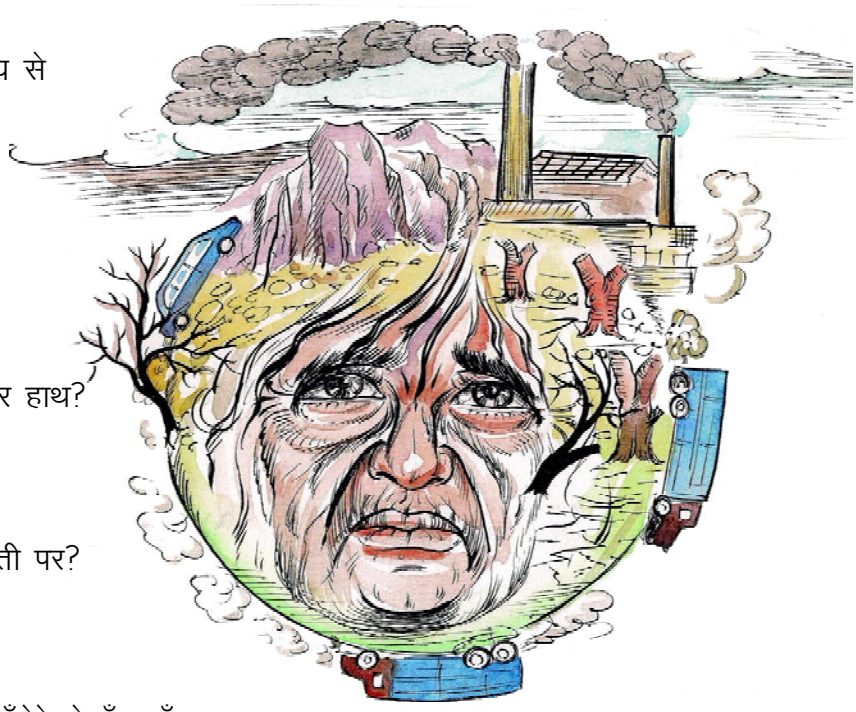

कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियों में
दिखाई पड़े हैं तुम्हें
बचाव के लिए पुकारते हजारों–हजार हाथ?

क्या, होती है तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर?

सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ?
इस घाट अपने कपड़े और मवेशी धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी किसी देवता को अर्घ्य?

कभी महसूसा है कि किस कदर दहलता है
मौन समाधि लिए बैठे
पहाड़ का सीना
विस्फोट से टूटकर जब छिटकता दूर तक कोई पत्थर?

सुनाई पड़ी है कभी भरी दुपहरिया में
हथौड़ों की चोट से
टूटकर बिखरते पत्थरों की चीख़?

ख़ून की उल्टियाँ करते
देखा है कभी हवा को,
अपने घर के पिछवाड़े में?

भाग–दौड़ की ज़िंदगी से
थोड़ा–सा वक्त चुराकर
बतियाया है कभी
कभी शिकायत न करने वाली
गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी से उसका दुख?

अगर नहीं,
तो क्षमा करना!
मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है।

शब्दार्थ

धमस – ऐसी आवाज़ जो आपको भीतर तक हिला दे, (दिल दहलाने वाली आवाज़); **अर्घ्य देना** – देवताओं को जल चढ़ाना; **गुमसुम** – चुपचाप।

अभ्यास

पाठ से

1. पेड़ों के चित्कारने से आप क्या समझते हैं?
2. नदी मुँह ढाँप कर क्यों रो रही है?
3. गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी कभी किसी से कोई शिकायत नहीं करती। ऐसा क्यों कहा गया है?
4. ख़ून की उल्टियाँ करते देखा है कभी हवा को

   (क) इस पंक्ति में किस समस्या की ओर संकेत किया गया है?

   (ख) इस समस्या को कम करने के क्या–क्या उपाय किए जा सकते हैं?
5. कविता के अंत में कवयित्री ने आदमी के आदमी होने पर संदेह क्यों व्यक्त किया है?
6. पृथ्वी को बूढ़ी कहने का क्या तात्पर्य है?

पाठ से आगे

1. कविता के माध्यम से प्रकृति को नुकसान पहुँचाने वाली किन–किन समस्याओं को उभारा गया है? अपने शब्दों में लिखिए।
2. वर्तमान में पहाड़ों को लगातार तोड़ा जा रहा है या दोहन किया जा रहा है।

   (क) आपके अनुसार इसके क्या कारण हैं? लिखिए।

   (ख) इससे पर्यावरण में किस प्रकार का असंतुलन बढ़ रहा है? चर्चा कीजिए।
3. यदि सचमुच में पेड़, नदी और हवा बोल पाते तो वे अपनी पीड़ा किस प्रकार व्यक्त करते? अपने शब्दों में लिखिए।
4. हमारे आसपास किन–किन प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग हो रहा है? इन्हें रोकने में हमारी क्या भूमिका हो सकती है? लिखिए।
5. हमारी संस्कृति व परंपराओं में कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जिनमें पेड़ों को बचाने के प्रयास नज़र आते हैं, जैसे पेड़ों को राखी बाँधना, गोद लेना और किसी न किसी व्रत व पर्व में उसकी पूजा करना आदि।

   क्या आपके परिवेश में पेड़ों से जुड़े पर्व या व्रत हैं? इनके बारे में जानकारी इकट्ठा कर निम्नलिखित सारणी में लिखिए।

पेड़ का नाम	इनसे जुड़े व्रत, पर्व	जुड़ी मान्यताएँ	फलदार हैं या नहीं	पत्तियों के बारे में
उदाहरण– पीपल	पितृ– अमावस्या	पूजा करने से पूर्वजों की आत्मा को शांति मिलती है।	फलदार है परंतु खाने के लिए उपयोगी नहीं	गहरे हरे रंग की, दिल के आकार की, चिकनी एवं जालीदार

भाषा के बारे में

1. कविता में पेड़ों, नदियों, पहाड़ों आदि को मानव के समान व्यवहार करते बताया गया है, जैसे पेड़ चीत्कार कर रहे हैं, नदी रो रही है, आदि।

   इस प्रकार के प्रयोग को 'मानवीकरण अलंकार' कहा जाता है।

   मानवीकरण अलंकार का प्रयोग जिन–जिन पंक्तियों में हुआ है, उन्हें छाँटकर लिखिए।

2. कविता में ऐसे शब्दों का प्रयोग हुआ है जिनमें स्थानीय/बोलचाल की भाषा का प्रभाव झलकता है। जैसे 'महसूसा' अर्थात् 'महसूस किया', 'बतियाया' अर्थात् बात की।

   इसी प्रकार के अन्य शब्दों को स्वयं से ढूँढ़कर लिखिए।

3. नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए–

(क) किस **कदर** रोती हैं नदियाँ।

(ख) हम आपकी बहुत **कदर** करते हैं।

CHNUH2

दोनों वाक्यों में 'कदर' शब्द के अर्थ अलग–अलग हैं। पहले वाक्य में इसका अर्थ 'के समान' और दूसरे वाक्य में 'सम्मान/आदर' है। ऐसे शब्द जिनके एक से ज्यादा अर्थ होते हैं, उन्हें हम अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

नीचे दिए गए शब्दों के अलग–अलग अर्थ स्पष्ट करने के लिए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

सीना, जीना, उत्तर, अंक, चरण

4. 'क्या' शब्द का प्रयोग करके बनाए गए प्रश्नवाचक वाक्यों को पढ़िए–

(क) क्या आप घर जा रहे हैं?

(ख) आपने नाश्ते में क्या खाया?

भाषा में प्रश्नवाचक वाक्य दो प्रकार के होते हैं : ''हाँ–ना'' उत्तरवाले प्रश्नवाचक वाक्य और सूचनाओं की अपेक्षा रखनेवाले प्रश्नवाचक वाक्य। पहलेवाले प्रश्नवाचक वाक्य का उत्तर हाँ/नहीं में ही होगा। इसमें क्या का प्रयोग हमेशा वाक्य के शुरू में ही होगा।

(क) 'हाँ–ना' उत्तरवाले पाँच प्रश्नवाचक वाक्य सोचकर लिखिए।

दूसरेवाले प्रश्नवाचक वाक्य के उत्तर में आपको कुछ न कुछ बताना होगा। इनके उत्तर में हमेशा नई सूचनाओं की उम्मीद रहती है। इन्हें सूचनाओं की अपेक्षा रखनेवाला प्रश्नवाचक वाक्य कहा जाता है। इनसे प्राप्त होने वाला उत्तर वाक्य में उसी स्थान पर आएगा जिस स्थान पर क्या का प्रयोग हुआ है।

जैसे– आपने नाश्ते में **क्या** खाया?

उत्तर : मैंने नाश्ते में **सेब** खाया।

ऐसे प्रश्नवाचक वाक्यों में **'क्या'** के अतिरिक्त **'कौन'**, **'कहाँ'**, **'कब'**, **'कितने'**, **'किसने'** आदि शब्दों का इस्तेमाल भी वाक्य में ठीक उसी स्थान पर होता है, जहाँ उसका उत्तर होता है। इसे एक उदाहरण द्वारा समझते हैं–

वाक्य : राम ने कल शाम अपने कमरे में दो सेब खाए।

प्रश्नवाचक वाक्य–

प्रश्न : **किसने** कल शाम अपने कमरे में दो सेब खाए?

उत्तर : राम ने

प्रश्न : राम ने **कब** अपने कमरे में दो सेब खाए?

उत्तर : कल शाम

प्रश्न : राम ने कल शाम **कहाँ** दो सेब खाए?

उत्तर : अपने कमरे में

प्रश्न : राम ने कल शाम अपने कमरे में **क्या** खाया?

उत्तर : सेब

प्रश्न : राम ने कल शाम अपने कमरे में **कितने** सेब खाए?

उत्तर : दो

(ख) इसी तरह से आप भी निम्नलिखित वाक्य से सूचनात्मक/प्रश्नवाचक वाक्य बनाइए।

वाक्य : हथौड़ों की चोट से भरी दुपहरिया में भी पत्थर चीख़ उठे।

योग्यता विस्तार

1. चिपको आंदोलन पर्यावरण रक्षा का आंदोलन है। इसे किसानों ने वृक्षों की कटाई का विरोध करने के लिए किया था। एक दशक से भी ज्यादा चले इस आंदोलन में भारी संख्या में स्त्रियों ने भाग लिया था। 'चिपको आंदोलन' के बारे में शिक्षकों से अथवा पुस्तकालय से और भी जानकारी इकट्ठा कीजिए तथा इस जानकारी को निम्न बिन्दुओं के अनुसार लिखिए–

   (क) यह आंदोलन कहाँ हुआ?

   (ख) इसके सूत्रधार कौन थे?

   (ग) इसके पीछे क्या सोच/विचार था?

   (घ) इसकी सफलता किस हद तक रही?

2. तेजी से बढ़ते शहरीकरण व औद्योगिकीकरण से किस प्रकार पर्यावरण प्रभावित हो रहा है? इस विषय पर समूह में चर्चा कीजिए।